



राजस्थान के नागौर जिले में औषधिय पादपों की कृषि

डॉ. शंकर लाल मेघवाल,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. राजेश कुमार वैष्णव,
दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य राजस्थान के खाद्यान्न उत्पादन की दृष्टि से क्षीण सम्भावनाओं वाले अर्द्ध शुष्क जिले नागौर क्षेत्र की भौगोलिक दशाओं के अनुकूल नये औषधिय पादपों की कृषि की बढ़ती सम्भावनाओं का अध्ययन करना है। शोध हेतु जिले के 11 गाँवों का अध्ययन किया गया है। शोध में पाया गया है कि क्षेत्र में औषधिय पौधों की खेती का तीव्रता से प्रसार हो रहा है, परन्तु विपुल सम्भावनाओं के बावजूद भी आवश्यक कृषि तकनीक, प्रशिक्षण, उन्नत बीजों का अभाव तथा स्थानीय कृषकों में इस कृषि के प्रति पर्याप्त चेतना का अभाव से कृषि की सम्भाव्य क्षमता का पूर्ण विकास नहीं हो पा रहा है। इसके लिए पर्याप्त सरकारी एवं गैरसरकारी प्रयासों की महती आवश्यकता है।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की खेती मानसून का जुआ है। भारत की जनसंख्या का 70 प्रतिशत हिस्सा कृषि पर आधारित है और भारत का विकास भी कृषि के विकास पर ही निर्भर है। विगत कई वर्षों से भारत का किसान घाटे में जा रहा है। कृषि लागत की बढ़ोतरी, उत्पादन की गुणवत्ता में कमी, तैयार फसलों के समय उसका उचित मूल्य का नहीं मिलना, मंहगे रासायनिक खाद, कीटनाशक के उपयोग में बढ़ोतरी, मंहगे उन्नत बीज आदि कई परिस्थितियों के कारण दिन प्रतिदिन किसान की हालत बिगड़ती ही चली जा रही है। इसके विपरीत औषधिय पौधों की खेती किसान के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही है। इसका मुख्य कारण किसान स्वयं उसका बीज उत्पादन कर सकता है। अधिकतर औषधिय पौधों में खाद देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इन पौधों को बीमारियां नहीं लगती, नहीं जानवर खाते हैं। इन पौधों को सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती है और ये पौधे या तो निर्यात होते हैं या दवा बनाने वाली कम्पनियां आसानी से खरीद लेती हैं। अतः जड़ी-बूटियों की खेती किसान के लिए एक सुनहरा अवसर है।

यही कारण है कि पिछले 20 वर्षों से औषधिय पौधों की खेती जैसे ईसबगोल, सोनामुखी, मेंहदी, सफेद मूसली, आंवला, मिल्कथिस्टल, अनारदाना, गुलाब फूल, गुलेनार, मूलेठी आदि की ओर किसानों का रुझान बढ़ा है। राजस्थान के नागौर जिले में सिंचाई सुविधाओं की कमी एवं रेगिस्तानी जलवायु के बावजूद यहां औषधिय पादपों की कृषि की प्रबल सम्भावनाएँ हैं। नागौर जिले की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों व दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करती है जहां

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली उपलब्ध नहीं हो पाती है। ऐसे में औषधिय पादप ही एक महत्वपूर्ण विकल्प प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार सीमित होते जंगल, उनके साथ सीमित होती वन औषधियां व ऐलोपैथी के दुष्प्रभाव आदि कारक औषधिय पादपों की कृषि करने के लिए प्रेरित करते हैं।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हमने अध्ययन हेतु – “राजस्थान के नागौर जिले में औषधिय पादपों की कृषि” विषय चुना है। नागौर जिला थार के मरुस्थल का ही एक भाग है, जहाँ खाद्यान्न फसलों के उत्पादन की सम्भावनाएं काफी क्षीण है तथा औषधिय पादपों जैसे आंवला, अश्वगंधा, मुलेठी, सनाय, सतावरी एवं गिलोय के उत्पादन की प्रबल सम्भावनाएं हैं। इन्ही कृषि एवं वाणिज्यक विकास की विपुल संभावनाओं का पता लगाना शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध के उद्देश्य

शोध का उद्देश्य नागौर जिले के औषधिय पादपों के कृषि स्वरूप एवं विकास स्तर का विश्लेषण कर परिणाम प्राप्त करना है। जिससे कृषि योजनाकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासक एवं औषधिय पादपों की कृषि में संलग्न किसान लाभान्वित होकर जिले में कृषि विकास के लिए उचित योजना निर्धारण कर सके। साथ ही जिले के औषधिय पादपों के वर्तमान कृषि स्वरूप एवं संसाधनों के संख्यात्मक, रचनात्मक एवं गुणात्मक पक्षों को ज्ञात करना आदि भी अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र

नागौर जिला राजस्थान के भौतिक विभाग पश्चिमी रेतीले मैदान के अर्द्ध शुष्क क्षेत्र (नागौर उच्च प्रदेश) में स्थित है। यह स्थलाकृति, अनुवर्ती, जलप्रवाह क्रम, नमकीन झीलों एवं चट्टानी तथा पहाड़ी धरातल के कारण अपने आप में विशिष्ट है। यह जिला 26°25' से 27°40' उत्तरी अक्षांश तथा 73°18' से 75°15' पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। जिले का क्षेत्रफल 17718 वर्ग किलोमीटर ,जनसंख्या घनत्व (2011) 187 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी है। नागौर जिले की औसत सामान्य वर्षा 38.86 सेमी, औसत तापमान 24.3°C ,आर्द्रता 43 प्रतिशत है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध कार्य नागौर जिले की औषधिय पादपों की कृषि तथा उसके प्रकारात्मक अनुभवों से सम्बन्धित है। प्राथमिक स्त्रोतों के रूप में नागौर जिले की विभिन्न तहसीलों से ग्यारह प्रतिदर्श गावों का चयन कर आंकड़ों व सूचनाओं को एकत्रित कर क्षेत्र में हो रही औषधिय पादपों की खेती से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। तथा द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में औषधिय पादपों की कृषि से संबंधित प्रकाशित अध्ययनों एवं शोध अभिलेखों का सहारा लिया गया है।

प्रतिदर्श गाँवों का विशिष्ट अध्ययन

क्र.सं.	गाँव	औषधिय पादपों की कृषि
1	थांवला (डेगाना)	ईसबगोल, ग्वारपाठा, सफेद मूसली, आंवला
2	बाड़ी घाटी (डेगाना),बांकलिया(लाडनू), अलाय(नागौर),रामपुरा(मकराना), रोटू(जायल),सांगू कलां(डीडवाना)	ईसबगोल
3	राजपुरा(नांवा)	ईसबगोल, ग्वारपाठा, मुलेठी, अश्वगंधा, अरण्ड
4	पाचौड़ी(खीवसर)	केर, कीकर,कुमटा

5	रिया बडी(मेडता)	ईसबगोल ,अश्वगंधा,शंखपुष्पी
6	बिद्याद(परबतसर)	ग्वारपाठा, गिलोय

प्रतिदर्श अध्ययन के लिए चयनित नागौर जिले में कुल 11 गाँवों के अध्ययन से पता चलता है कि असिंचित गांवों की तुलना में सिंचित गांवों में कुछ औषधियों पौधों की खेती अधिक की जा रही है। किन्तु शुष्क क्षेत्रों में औषधिय पादपों की खेती के प्रयास अभी हाल ही में शुरू किये गये हैं। असिंचित क्षेत्रों में सोनामुखी की खेती सफलता पूर्वक की जा रही है। जिससे असिंचित क्षेत्र में कृषकों की आय बढ़ी है। साथ साथ नागौर के थांवला, बाड़ी घाटी व डेगाना के क्षेत्रों में औषधिय पादपों की खेती से इन क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। इस प्रकार नागौर जिले की भौगोलिक दशाओं जो खाद्यान्न फसलों के उत्पादन की दृष्टि से बहुत ज्यादा अनुकूल नहीं हैं, वहाँ औषधिय पादपों की कृषि क्षेत्र के विकास हेतु स्वर्णिम अवसर प्रदान करती है।

औषधिय पादपों की कृषि में नागौर जिला आज पीछे नहीं है। ईसबगोल, ग्वारपाठा, गुग्गल, रतनजोत, जीरा, मैथी, अरण्डी आदि औषधिय पादपों के उत्पादन एवं कृषि क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। विषम भौगोलिक दशाओं में जहाँ अन्य फसलों का उत्पादन सम्भव नहीं है, उन क्षेत्रों में औषधिय पादपों की कृषि ने इस क्षेत्र के विकास को नई दिशा प्रदान की है।

साहित्य का पुनरावलोकन

एम.के.खण्डेलवाल तथा मोनिका रोट (2004)¹ ने विभिन्न वनौषधियों का गहन अध्ययन एवं वर्गीकरण कर इनकी सामान्य जानकारी तथा उपयोगों का वर्णन किया है। मोहनलाल गुप्ता (1999)² ने अपनी पुस्तक में नागौर जिले के राजनीतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया है। नारायण प्रजापति (2002)³ ने अपनी पुस्तक में 1346 औषधिय पादपों के वनस्पति नाम, कुल, वितरण, उनके भागों का रंगीन चित्रों के साथ वर्णन किया गया है। गुरपाल सिंह उनियाल एवं मायाराम उनियाल (1999)⁴ ने 46 औषधिय पादपों की कृषि तकनीक एवं उनके विपणन हेतु राष्ट्रीय औषध पादप एवं राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की सम्पूर्ण जानकारी दी है। तरुण प्रजापति (2007)⁵ ने अपनी मासिक पत्रिका में विभिन्न औषधिय पादपों के परिचय, रासायनिक संगठन, उत्पादन, आवश्यक दशाओं तथा उपयोग से सम्बन्धित सभी तथ्यों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उजागर किया है। पी. सी. जैन (2003)⁶ ने अपनी पुस्तक में औषधिय पौधों के लिए उपयुक्त जलवायु तथा उत्पादन विधियों का वर्णन करते हुए व्यावसायिक क्षेत्र में इनके विशेष योगदान का वर्णन किया है। जे.पी.सी. चन्द्रसेना (2008)⁷ ने भारतीय एवं सिलोन में पाए जाने वाले औषधिय पादपों की रासायनिक संरचना, उनके उपयोग एवं जलवायु का वर्णन किया है।

निष्कर्ष

नागौर जिला भारत के महान पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र का ही एक भाग है जहाँ पर खाद्यान्न फसलों जैसे गेहूँ, मक्का, चावल आदि के उत्पादन की पर्याप्त अनुकूल दशाएं नहीं पाई जाती हैं। ऐसे में नागौर जिले की भौगोलिक दशाओं के अनुकूल स्थिति में पैदा होने वाले बहुमूल्य एवं दुर्लभ औषधिय पादपों की कृषि कर इस क्षेत्र को समृद्ध बनाया जा सकता है। इस प्रकार औषधिय पादप भविष्य में नागौर के सर्वांगीण विकास का प्रमुख आधार बन सकते हैं।

दूसरी और राजस्थान समेत सम्पूर्ण नागौर क्षेत्र में बेरोजगारी प्रमुख समस्या है। ऐसे में औषधिय पादपों की कृषि को रोजगार उन्मुख बनाना क्षेत्रीय विकास के लिए आवश्यक है। इसके साथ ही राज्य में "राजस्थान कृषि निर्यात निगम" की स्थापना की जाये, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को विश्व बाजार में 'ब्राण्ड नेम' से कृषि उत्पादों को बेचने में प्रोत्साहन मिले।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का प्रमुख उद्देश्य राजस्थान के नागौर जिले में औषधिय पादपों की बढ़ती सम्भावनाओं, कृषि तथा वाणिज्य विकास को बढ़ावा देना है, तभी क्षेत्र औषधिय पादपों के उत्पादन में राजस्थान में ही नहीं भारत में भी अपना विशिष्ट स्थान बनाकर क्षेत्र का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खण्डेलवाल एम.के., रोट मोनिका (2004): औषधिय पौधे (जनजातियों द्वारा रोगों में उपयोग) रितु पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. गुप्ता मोहनलाल(1999): नागौर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, शुभदा प्रकाशन, जोधपुर।
3. प्रजापति नारायण दास (2002): "जड़ी-बुटियों की सरल खेती", राजस्थान एग्रो फोरेस्ट्री कार्पोरेशन, जोधपुर।
4. उरियाल गुरुपाल सिंह (1999): "औषधिय पादपों का व्यावसायिक कृषिकरण", उपवन ग्रन्थालय, जोधपुर।
5. प्रजापति तरुण (2007): अमलतास, सोनामुखी नगर, जोधपुर।
6. जैन पी.सी. (2003): "औषधिय एवं सुगन्धित पौधों की व्यावसायिक एवं वैज्ञानिक खेती" चिराग पब्लिकेशन (भीलवाड़ा)।
7. चन्द्र सेन जे.पी.सी. (2008): मेडिसिनल प्लांट्स ऑफ इंडिया एण्ड सिओल, एस्टिक पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
